Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2020, VOL- 8/62

कला और सौन्दर्य

प्रेमलता कश्यप, Ph. D.
असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स डिग्री, कालिज, मुरादाबाद।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं कला सदैव सौन्दर्य की परिचायक रही है। भारतीय सौन्दर्यशास्त्र कला, वास्तुकला और साहित्य पर एक अद्वितीय दार्शनिक और आध्यात्मिक दृश्टिकोण समाहित किए हुए हैं। भारतीय सौन्दर्यशास्त्र में रस आवश्यक मानसिक स्थिति को प्रदर्शित करता है एवं कला का प्रमुख भावनात्मक विशय है या फिर यू कहें कि कला व्यक्ति में विकसित न होने वाली वह प्रथम भावना है जो किसी वस्तु एवं कार्य को देखने सुनने एवं करने से उत्पन्न होती है। भारतीय कला सदैव सौन्दर्य से ओत प्रोत रही है फिर चाहे वह सिन्धु घाटी से उपलब्ध कला कृतियॉ हो या राजपूतशेली, मुगलशैली, मथुरा शैली आदि सभी शैलियों से सम्बन्धित हो सम्पूर्ण विश्व में भारतीय दर्शन सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रभावशाली माना जाता है। प्राचीन काल की परम्परागत विधियों से निर्मित कलाकृतियों में सौन्दर्य का वर्चस्व दर्शनीय है। वही दूसरी ओर इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए आज अनेक नवीन कलाकार नये नये माध्यम में कलाकृतियों का निर्माण कर रहे हैं। जिनमें सौन्दर्य का प्रभाव दृश्टिपात होता है।

कला – कला किसी भी देश की संस्कृति, धर्म, दर्शन आदि को व्यक्त करने का सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम है। कला सदैव प्रत्येक अभिव्यक्ति के सर्वाधिक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य करती है, क्योंकि इतिहास सदैव पूर्णरूप से सत्य नहीं हो सकता, ऐसी अवस्था में उस स्थान से सम्बन्धित कला चाहे वह लोककला हो अथवा किसी अन्य रूप में उपलब्ध हो उस देश, धर्म संस्कृति के प्रतिबिंब के रूप में कार्य करती है। भारतीय सांस्कृतिक विरासत अत्यधिक विशाल एवं विविध है। जो विभिन्न सांस्कृतियॉ विरासत अत्यधिक विशाल एवं विविध है जो विभिन्न संस्कृतियों एवं धर्मो को समाहित किए हुए है। भीम बेटका गुफा चित्रण से लेकर चोल मंदिरों तक सिन्धु घाटी सभ्यता से लेकर कालिदास तक भरतनाटयम से लेकर मुगलशैली तक, बंगाल स्कूल से लेकर आधुनिक काल तक भारतीय कला के विभिन्न रूप दर्शनीय है जो सौन्दर्य से परिपूर्ण कलाकृतियों काव्य एवं कला की अन्य विद्याओं में उपलब्ध है।

कला एक क्रिया है और जो कुछ भी हमारे सामने है वह इस क्रिया द्वारा निर्मित कृति है। 'कला शब्द की मूल धातु 'कल' है जिसका अर्थ प्रकट करना, गिनना तथा संकलन करना है। इस प्रकार कला वह मानवीय क्रिया है। जिसका विशेश लक्षण ध्यान से देखना, गणना, अथवा संकलन, मनन चिन्तन एवं स्पश्ट रूप से प्रकट करना है। कला का हम विभिन्न रूपों में आकंलन कर सकते हैं जो इस प्रकार है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कला तकनीक है – हम इसको रचना प्रक्रिया अर्थात तकनीक कह सकते हैं। हमारी सभी क्रियाऐ पूर्ण रूप से सोची समझी प्रक्रियाओं पर आधारित नहीं होती हम अपनी बात कहने के लिए तुरन्त बोलना आरम्भ कर देते हैं। यदि हमें काव्यपाठ करना है तो काव्य के अनुकूल भाशा, छंद आदि का प्रयोग करना पड़ेगा। इसी प्रकार यदि किसी कलाकृति का निर्माण करना है तो कागज, तूलिका, रंगों का कैसे प्रयोग करे ये जानना पड़ेगा दूसरे भाब्दों में हमें उस समस्त सामग्री की तकनीक को समझना पड़ेगा जो किसी विशेश कलाकृति की रचना के लिए आवश्यक है। तकनीक अथवा प्रविधि के लिए यूनानी भाशा में ''तेक्नी'' शब्द का प्रयोग हुआ है। इस शब्द का सम्बन्ध संस्कृत ''लक्षण'' से माना जाता है। जिसका अर्थ तराशना तथा कॉट–छॉट करना है। लैटिन भाशा में इससे मिलता–जुलता भाब्द तेक्शो है। इसी से वर्तमान अंग्रेजी ाब्द ''टेक्नीक'' का विकास हुआ जिसे हिन्दी में तकनीक कहा जाता है।

कला शिल्प है – अग्रेंजी में इसे क्राफ्ट कहते हैं। इस दृश्टि से सभी कलाएं किसी न किसी सीमा तक शिल्प की श्रेणी में आती है। मूर्ति शिल्प, वास्तु शिल्प, धातु शिल्प, वस्त्र शिल्प आदि इसी प्रकार के अन्य शिल्प है। जिस प्रकार की क्रिया स्थूल रूप में इन शिल्पों के पाई जाती है। उससे मिलती जुलती विधि काव्य, संगीत तथा चित्र आदि की सामग्री के प्रयोग में भी अपनायी जाती है। वस्तुतः जिस प्रकार तकनीक एक व्यापक शब्द है उसी प्रकार शिल्प की अत्यन्त व्यापक और लचीला शब्द है।

कला एक कौशल है – कला की क्रिया केवल शिल्प विधि अथवा तकनीक पर ही आधारित नहीं है। किसी कृति की रचना करते समय शिल्पी अनेक युक्ति सोचता है अपनी कृति को आर्कशक, प्रभावशाली और नवीन बनाता है इसी प्रकार शिल्प की किया एक कुशलतापूर्ण किया है।

कला ज्ञान है – तकनीक के पूर्ण ज्ञान ओर निरन्तर अभ्यास के बिना कला में कुशलता प्राप्त नहीं की जा सकती इसलिए कला को ज्ञान भी माना गया है। कला को केवल कुशलतापूर्ण तकनीकी क्रिया ही नहीं माना गया है। वरन उन्हें ज्ञान का एक रूप भी स्वीकार किया गया है। प्राचीन भारतीय मतानुसार चौंसठ कला ''उपविद्या'' (अर्थात उच्च्य प्रकार के ज्ञान से भिन्न ज्ञान) के रूप में वर्णित की गयी है। इस प्रकार कला केवल नियमों के आधार पर कौशल अथवा कारीगरी का प्रदर्शन मात्र नहीं वरन मानसिक दृ ट से महत्वपूर्ण भी है।

कला अनुकृति है – ज्ञान प्राप्ति के कई साधन है। प्रसिद्व यूनानी दार्शनिक अरस्तु के अनुसार हम संसार का बहुत सा ज्ञान अनुकरण द्वारा अर्जित करते हैं। मूर्तिकला तथा चित्रकला में अनुकृति को प्रथम स्थान दिया गया है। कला में हम जीवन की अनुकृति का आधार लेकर चलते हैं। जिसका उपयोग जीवन में व्यवहार में लाते हैं। मूर्तिचित्र आदि में हम चारों ओर दिखायी देने वाले रूपों का ही उपयोग करते हैं। विशय वस्तु के रूप में हम कलाओं में जीवन से ही प्रेरणा लेते हैं। इस प्रकार सभी कलाओं में हम अनुकृति का सहारा लेते हैं।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कला कल्पना है – मध्य काल में कलाओं को मानसिक क्रियाऐं सम्बन्धित मान लेने के कारण केवल बाहरी कुशलता पर बल देने की भावना कम होने लगी कला को कल्पना के सहयोग से नवीन सृि ट और आन्तरिक अनुभूति की अभिव्यक्ति करने वाली क्रिया माना गया इस विचारधारा के विकास में कला के सामाजिक मूल्य एवं महत्व का आधार लिया गया। प्लेटों ने श्रे ठ कला को देवी प्रेरणा का परिणाम बताया था अरस्तु ने औचित्य तर्क सम्भाव्यता आदि के द्वारा कला के अनुकरण में कल्पना का मार्ग खोला जिसके आधार पर आगे चलकर पन्द्रहवीं भाताब्दी में कला को देवी प्रेरणा के बजाय मानवीय सृजन माना जाने लगा।

कला अभिव्यक्ति है – कला का सिद्वान्त केवल अनुभूति अथवा कल्पना तक ही सीमित नहीं रहा। ''लियोनारडो'' ने कहा था कि कलाकार जिन आकृतियों की रचना करता है वे उसके आन्तरिक भावों की अभिव्यक्ति होती है। अतः कला केवल अनुकृति अथवा कल्पना न होकर अभिव्यक्ति भी होती है। कला के द्वारा भावों अथवा विचारों का सम्प्रेशण किया जाता है। अतः कला एक प्रकार की भाशा अथवा अभिव्यक्ति है। जिस प्रकार कला के द्वारा हम अपने विचार अभिव्यक्त करते और दूसरों तक पहुॅचाते हैं, उसी प्रकार कलाकृतियों के द्वारा भी सम्प्रेशित करते हैं। डा0 यामसुन्दर दास के शब्दों में ''जिस अभिव्यंजना में आन्तरिक भावों का प्रकाशन तथा कल्पना का योग रहता है। वह कला है कला में कल्पना का प्रयोग अनिवार्य रूप से रहता है।

सौन्दर्य – भारतीय कला परम्परा में सौन्दर्य कला के विकास के साथ–2 विकसित हुआ है। वैदिक युग से ही भारतीय संस्कृति में सौन्दर्य का वर्चस्व रहा है। भारतीय कला के आरम्भिक युग प्रागैतिहासिक काल में निर्मित कला कृतियॉ भी सौन्दर्य से परिपूर्ण दिखायी देती है। प्रागैतिहासिक मानव ने जिस प्रकार अपनी संस्कृति सभ्यता, भाव एवं विचारों का विकास किया वह देखने योग्य है। इस कृमिक विकास के अनेक तथ्य एवं प्रमाण आज हमारे समक्ष मौजूद हैं। जो प्रागैतिहासिक मानव के इस कृमिक विकास को पूर्ण रूप से प्रदर्शित करते हैं। जिनमें प्रागैतिहासिक कला सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जिसके आधार पर हमें वहॉ की संस्कृति, सभ्यता आदि की सर्वाधिक जानकारी प्राप्त होती है। कलाकृतियों के साथ साथ पात्र, कला मुहरें, आभूशण एवं वास्तुकला में सौन्दर्य के दर्शन हमें सिन्धु घाटी की सभ्यता से प्राप्त कलात्मक वस्तुओं में होते हैं। ये पात्र सिन्घु घाटी के क्षेत्र में पायी जाने वाली लाल एवं काली मिटटी के द्वारा बनाये जाते हैं। इन बर्तनों, पशु आकृतियों, मानवाकृतियों (मातृदेवी की मूर्ति) वनस्पति तथा ज्योतिमर्य अंकन प्राप्त होते हैं। साहित्य में जिस प्रकार ाब्दों का उपयोग किया गया है। वह अप्रतिम सौन्र्दय को समाहित किए हुए है। भारतीय कला परम्परा में सौन्दर्य की इसी अप्रतिम छवि के दर्शन हमें अजन्ता के भित्ति चित्रों में दिखायी देता है। अजन्ता में निर्मित गुप्ता चित्रों में वृद्व की छवि देखकर अत्यधिक सौम्यता एवं सौन्दर्य का अनुभव होता है। मानो कलाकार ने सम्पूर्ण जगत में सौन्दर्य एवं सौम्यता को तूलिका में समेटकर बौद्व चित्रों की छवि यकायक ही दर्शक का मन मोह लेती है। भारतीय कला में सौन्दर्य की इसी परम्परा को

आगे बढाते हुए मध्यकालीन कला में निर्मित कलाकृर्तियों का वर्णन आव यक हो जाता है। सत्य शिवं सुन्दरम अर्थात ई वर सत्य हैं कल्याणकारी है सौन्दर्य है वह सौन्दर्य का स्त्रोत है। जिस प्रकार सूर्य प्रकाशमय है और दूसरों को प्रकाशित करता है उसी प्रकार संसार में कलाकार का स्थान भी माना जाता है। कला अपने अनेक सुंदर रूपों में मानव जीवन के रोम–2 में बसी हुयी है कहीं वह प्रकृति की प्रचंड भाक्तियों का प्रतीक बनकर मानव जीवन को सहारा देती है और चित्रकला के रूप में उसके द्वारा रची जाती है तो कहीं अपनी रमणीयता और करूणा में उसके भाव विभोर कर हद्वय में कविता की धारा बहा देती है और कहीं हवा के मंद मंद झोकों की आवाज और झील–झरनों की झर झर उसके दिल से कोयल की कूक बन झरने लगती है। इस तरह जीवन के साथ कलाकृति और उसके सौन्दर्य का गहरा तालमेल है। एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती।

कला को सौन्दर्य से पृथक नहीं किया जा सकता जहॉ कला है वहॉ सुन्दरता का होना स्वाभाविक है। साहित्य में भाब्दों, संगीत में स्वरों नृत्य में गति और ताल, चित्र में रेखा और रंगों, इसी प्रकार मूर्तिकला में प्रस्तरों आदि में छेनी हथौड़े से रूपाकारों को सृजित कर कलाकार अपनी भावनाओं की सौन्दर्यमयी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है, दर्शक या स्रोता उस सौन्दर्यमयी कला अभिव्यक्ति में अपने मनोभावों और मनः स्थिति के अनुरूप भावों की अनुभूति करता है और आनंदित होता है। कलाकार प्रकृति के विविध रूपों से अपनी आतंरिक भाक्तियॉ से नाना प्रकार की गधों से उत्पन्न सौन्दर्यपूर्ण वातावरण से अपनी काल्पनिक अभिव्यक्ति को सौन्दर्यमयी रूप में उददीप्त करता है। जिससे आनंद की अनुभूति होती है। इसी आनंद की प्राप्ति का बोध सौन्दर्य बोध है। इसी सौन्दर्य की अभिव्यक्ति कला है। सौन्दर्य बोध विस्तृत होते समस्त सृश्टि सुंदर प्रतीत होने लगती है। सौन्दर्य अलौकिक वस्तु है। उसका निवास आत्मा है। कला का उदेश्य भी इसी आलौकिक सौन्दर्य को प्रदर्शित करना है। सौन्दर्य एक अत्यन्त व्यापक धारणा है इसकी परिमिति में प्रकृति से लेकर मानव निर्मित पदार्थ तक सभी आ जाते हैं। जब तक कलाकार में सौन्दर्य नहीं होगा वह दूसरों को सौन्दर्य कैसे प्रदान कर सकता है। जब तक वह स्वयं गुणी और अनुभवी नहीं है। उसकी रचना में गुण कहॉ से आ सकता है। स्वयंगुणी होकर अपने गुणों को अपनी कला द्वारा प्रदर्शित करता है। ब्रहम अर्थात सृजनकर्ता प्रकृति को रचता है, और मनश्ुय ईश्वर के द्वारा रचित प्रकृति के सौन्दर्यात्मक रूप को कला में उकेरता है। प्रेमचंद जी के अनुसार हमने सूरज का उगना और डूबना देखा है। उशा और संध्या की लालिमा देखी है सुन्दर सुगन्ध भरे फूल देखें हैं। नदियॉ देखी हैं नाचते हुए झरने देखे हैं साहित्यकार, कवि या चित्रकार इसी सत्य को निखारता है उसे स्नेह से सींचता है तब एक कलाकृति से वास्तविक सौन्दर्यानुभूति प्राप्त होती है। वस्तुतः स्नेह में बड़ी भाक्ति होती है। यदि हम पेड़ पौधे का खाद पानी आदि से संचित कर स्नेह प्रदान करते हैं तो वह वृक्ष फलता फूलता है। हमें अपने फल, पुश्प सब्जियॉ आदि प्रदान करता है। यह स्थिति कला भी होता है। जब हम कृति सृजन में वस्तु के ब्राहय स्वरूप के साथ साथ उसके आन्तरिक सौन्दर्य को अपनी कल्पना अनुभूति से संवारते हैं।

भारत में सौन्दर्य के स्त्रोत :– भारतीय सौन्दर्यशास्त्र के स्त्रोत अर्थात मूलाधार काव्यशास्त्र हैं। शब्दों के माध्यम से सौन्दर्य का जो विवरण काव्यशास्त्र में प्राप्त होता है। वैसा सूक्ष्म विवरण अत्यंत संभव नहीं है। पश्चिम जगत में सौन्दर्य के जिस स्वरूप का विवेचन आधुनिक युग में हो रहा है। उसे हमारे मनीशी हजारों वर्श पूर्ण ही कर चुके हैं। रस, अलंकार, ध्वनि, औचित्य, रीति, वक्रोक्ति एवं साधारणीकरण आदि सिद्वान्त सौन्दर्य की अनवरत खोज का ही प्रमाण है। वेदों में सौन्दर्य के लिए चारू, कल्पना, अदभुत प्रिय रूप जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। उपनिशदों में पूर्णरूप से आध्यात्मिक आधार पर सौन्दर्य की चर्चा की गयी है। उसमें केवल ईश्वर को ही सौन्दर्य से जोड़ा गया है। ईश्वर संहिता में कहा गया कि सौन्दर्य और लावण्य से परिपूर्ण आकृति आनन्ददायी होती है। सौन्दर्य और कला, कला और सौन्दर्य एक दूसरे के पूरक हैं। यदि कला शरीर रूप है तो सौन्दर्य उसका प्राण है जिस प्रकार प्राण के बिना चेतना चेतना के बिना शरीर का कोई असित्व नहीं उसी प्रकार सौन्दर्य के बिना कला भी बेरंग है। विशेश रूप से ललित कलाओं के सृजन का मूलभूत उददेश्य सौन्दर्य का सृजन ही होता है। कलाकार की सौन्दर्यमयी सर्जना का नाम ही कला है। कला में सहानुभूति उसका आवश्यक अंग है। तभी तो कलाकृति के द्वारा शुद्व विचार सृश्टि से सम्भव है। उसी को सौन्दर्यबोध कहा गया है। कला के द्वारा सौन्दर्य को प्रत्यक्ष किया जाता है। भारतीय कला इतिहास इसका साक्ष्य है। प्राचीन गृहस्वामी मानव ने अपनी अभिव्यक्ति रेखाओं द्वारा चित्र उकेर कर भी। सिन्धु घाटी में विभिन्न बर्तन भाण्डों का निर्माण हुआ। जिन्हें सुन्दरता प्रदान करने हेतु।

उपसंहार

कला का ज्ञान मानव के सर्वागीण विकास के लिए आवश्यक है। यह मनुश्य की मानसिक शक्तियों का विकास करके उसे पशुत्व से ऊपर उठाता है। भर्तृहरि का लिखा हुआ यह प्रसिद्व श्लोक मानव जीवन में कला के महत्व पर प्रकाश डालता है। साहित्य संगीत कला विहीन, साक्षात पशु पुच्छ विशाण हीनः।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

अशोक –कला सौन्दर्य और समीक्षाशास्त्र संजय प्रकाशन राजमण्डी आगरा – 2
वाचस्पति गैरोला – भारतीय संस्कृति और कला ब्रहदत्त दीक्षित, प्रकाशन उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी लखनऊ।
डा0कुमार विमल – कला विवेचन, भारती भवन प्रकाशन प्रथम संख्या 1973 पटना – 1, प्रथम संस्करण – 1968
w.w.w.abhivyakti
भारद्वाज डा0 ओमप्रकाश – सौन्दर्य दृश्टि चिन्ता प्रकाशन, पिलानी, राजस्थान, प्रथम संस्करण 1983
डा0 अर्चना रानी, भारतीय परम्परा में सौन्दर्य प्राइम, पब्लिशिंग हाउस, मेरठ प्रथम संस्करण, 30 जनवरी 2020
क्षेत्रिय डा0 शुकदेव, कला बोध एवं सौन्दर्य संस्करण 1989
अशोक , कला निबन्ध, द्वितीय संशोधित एवं परिवर्तित संस्करण – 1989

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies